हलफ़नामा

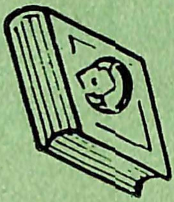

H
811.8
C 399 H

जसबीर चावला

हलफनामा

(कविता-संग्रह)

जसबीर चावला

1083/43 बी

चंडीगढ़-160022

0172-667203

Library IIAS, Shimla
H 811.8 C 39
G5364

Indian Institute of Advanced Study
G-5364
7.11.002
SHIMLA

दिवजोत प्रकाशन

राँची—834002

हलफनामा

मज़हब 'गर सिर झुकाने से बनता
तो सिलाई कारखानों में बनता ।

जसबीर चावला

C 399 H

दिवजोत प्रकाशन
एन–82, श्यामली
राँची-834002
द्वारा प्रकाशित

प्रथम संस्करण 1989 : मूल्य 30.00
सर्वाधिकार लेखकाधीन

दीपक प्रेस
एस. 17/272, नदेसर,
वाराणसी-221002
द्वारा मुद्रित

HALAFNAMA
(Election of Poem)
by **Jasbir Chawla**

भाई

मुरलीधर के

चलते

कविता-क्रम

1. हलफनामा	9
2. सूरज और कोयला	10
3. जाफना	12
4. ऊपर महल	13
5. खैरासोल का कब्रिस्तान	15
6. कबूतर दड़बों का चाँद	16
7. गाँधी मैदान	17
8. खामोशी	18
9. वर्ष शेष	20
10. वक्त	21
11. पूजा का नाम	23
12. सूर्योदय	25
13. भीड़	26
14. सब-वे	28
15. घुड़सवार	30
16. अन्दर की बात	31
17. वतन	33
18. स्टॉकयार्ड	34
19. एक दिन जिस दिन	36
20. बचपन	37
21. लोहे की रोटी	39
22. पापीया से	41
23. उधर का हिसाव	42
24. घमौची	43
25. बस का खत्म होता सफर	44
26. रात	46
27. पहला अक्षर	47

28. मज़हब	48
29. अंधेरा ज्यादा है	49
30. मक्खन	51
31. मंडी	52
32. निशान नंबर–3	53
33. असंतोष	54
34. घर की सफाई	56
35. उड़ान	58
36. चिकी	59
37. 1983 के लिये	60
38. दौर	61
39. जलियाँ	62
40. शांति की खोज	64
41. चाँद	66
42. लक्ष्य के लिये	67
43. धूप निकलेगी	68
44. नौ बजे	69
45. नहीं लौटी चिड़िया	70
46. ग्रह-शान्ति	71
47. ईश्वर	73
48. पछतावा	74
49. गर्मी की रात	75
50. नमस्कार	76

●

हलफनामा

रात घुटनों तक गहरी हो गई है
और सुबह एक हाथ के फैसले पर सुबक रही है।
सही शब्द चुनने के पहले
एक सही बात होनी चाहिए
'गर हम अब तक झगड़ते रहे हैं
तो एक ही वजह है कि
हमने सही बात का फैसला नहीं किया
वरना हमारे दरम्यान
कोई भाषा इतनी निकम्मी नहीं होती
कि जरूरत पड़ने पर इतना भी न कह सकें—
"हम हिन्दुस्तानी हैं"
और अब इतनी जगह फिर खाली हो गई है
कि एक अवतार बार-बार दुहरा सके
"जुल्म मत सहो, उसके खिलाफ लड़ो"
विकल्प की ईससे बुरी हालत क्या होगी
कि जो पच नहीं सकता उसका स्वाद ले रहे हैं
कि तालू सह नहीं सकता और दाँत चबा नहीं सकते
जम्हूरियत कुंजड़ों की भाजी का सौदा नहीं
कि तौलते भी जायें, बोलते भी जायें।

सूरज और कोयला

कोयले में जो जलता है वह सूरज है
तुम्हारी आँखों में जलता है, वह कोयला है।

आँतों की ऐंठन में कोयला राख होता है
सूरज राख नहीं होता
कोयले की तरह सूरज नहीं बिकता
न उसकी दलाली हो सकती है
न उससे तुम्हारी हाँड़ी काली हो सकती है।

तुम अपनी परछाइयाँ धुन कर देख लो
सूरज किसी जालीदार अहाते में नहीं होता
वह इस तरह होता है
कि अगर आधी रात तुम उठ बैठो तो सोचो
कि सर पर चमक रहा है;
सुबह देर से उठो तो सोचो
बादलों में छुप रहा है !
दफ्तर पहुंचने से पहले वह तुम्हारी जगह होता है···!

शाम जब जहरीले साँप की तरह
बिल में घुसती नजर आये
तो तुम्हारे घर लौटने के पहले वह
दरवाजे पर जल रहा होता है
और साथ सटी बैठी पानी उबालती
तुम्हारी देह में मुस्कुराता है।
कोई खदानें चीरकर सूरज नहीं लाता है
न समुन्दर में कोई पाता है···

गेहूँ की हीरों-सी बाली में;
घास और सीपी में,
अठखेलती मेघों की टोली में,
इंद्रधनुष में,
सूरज होता है···

चिमनी से दिन-रात निकलते कोयले से
सूरज अंधा नहीं होता।

जाफना

मलियाना और काला हांडी में कोई अन्तर नहीं
स्थिति नियन्त्रण में है, पर किसके ?
कौन बसों से खींचकर यात्रियों की हत्याएँ करता है
कौन खुड्डा और जाफना एक ही कूची से रंगता है
छापामार तमिल हो या फिलिस्तीनी, नहीं फर्क
कौन जनता की चुनी हुई सरकार पर
कभी कू कभी कें करता है ?

मसला धरती और पानी के बँटवारे का नहीं
कौन बुनियादी मुद्दों पर बातचीत के बजाय फौज रुबरु
करता है
हर लोहा कंचन हो जाना चाहता हो, पता नहीं
पर कोई भी लोहा वधिक के घर रहना नहीं चाहता
दूरी लम्बी हो या मध्यम, कौन उसे
प्रक्षेपास्त्रों के दर्जों में तय करना चाहता है
कौन देशभक्तों को सीमा पर ले जा गोली मारता है
फिर उनकी समाधि पर श्रद्धांजलि भेंट करता है ?

सृष्टि ने भिन्नता बनाई है ऊँचाइयों-तापमानों की
धर्म सारे विश्व की विविधता को मानव की एकता में
लय करता है
फिर कौन काले-गोरे, मजहब, भाषा और नस्ल समझा
अपना उल्लू साधता है, आदमी-आदमी में भेद करता है
पड़ोसी भाई को भूखा-झुलसता देखें कहाँ की मानवता है
कौन अपने हथियार बेचने को हर मुल्क में जाफना तैयार
करता है ?

ऊपर महल

ऊपर महल में सब एक है
जरूरत पड़ी तो तुम्हारी आवाज़ कुचलने के लिए
वही असले आयेंगे जिन्हें
दाँतों में रखने से तुम्हें भड़काया जाता रहा है
मदारी के डमरु और बंसी से कभी
सोनागाछी में, क्रान्ति आयेगी ?

अरे ये, किस्से-कहानियाँ
रेखायें-वार्त्तायें
विवाद-चरण
सब बवण्डर है
तुम्हारी आँखों का दीवाला पीटने के लिए
नहीं तो क्या
दहलते नागासाकी से प्रशान्त महासागर सुरक्षित है ?
वियतनामी गुप्त कब्रगाहों की खोज से युद्ध बन्द हो गये ?
ये पौराणिक कथाओं के मसाले लगे भाषण
ये जज्बातों को उखाड़ने वाले चटपटे उपदेश
ये जाति-देश के नाम पर उबालने वाले कोरे सन्देश
ऊपर महल में सब एक है।
स्वांग करती डमरु और बांसुरी।

तुमने कभी रुपये का सिक्का हथेली में नहीं कसा
फिर आँख के सामने रख उसमें झाँका नहीं ?
तुमने देखा होगा
उँगलियाँ उसी तरह पत्थर हो जाती हैं
जैसे ट्रिगर पर

जाफना

मलियाना और काला हांडी में कोई अन्तर नहीं
स्थिति नियन्त्रण में है, पर किसके ?
कौन बसों से खींचकर यात्रियों की हत्याएँ करता है
कौन खुड्डा और जाफना एक ही कूची से रंगता है
छापामार तमिल हो या फिलिस्तीनी, नहीं फर्क
कौन जनता की चुनी हुई सरकार पर
कभी कू कभी कें करता है ?

मसला धरती और पानी के बँटवारे का नहीं
कौन बुनियादी मुद्दों पर बातचीत के बजाय फौज रुबरु
करता है
हर लोहा कंचन हो जाना चाहता हो, पता नहीं
पर कोई भी लोहा वधिक के घर रहना नहीं चाहता
दूरी लम्बी हो या मध्यम, कौन उसे
प्रक्षेपास्त्रों के दर्जों में तय करना चाहता है
कौन देशभक्तों को सीमा पर ले जा गोली मारता है
फिर उनकी समाधि पर श्रद्धांजलि भेंट करता है ?

सृष्टि ने भिन्नता वनाई है ऊँचाइयों-तापमानों की
धर्म सारे विश्व की विविधता को मानव की एकता में
लय करता है
फिर कौन काले-गोरे, मजहब, भाषा और नस्ल समझा
अपना उल्लू साधता है, आदमी-आदमी में भेद करता है
पड़ोसी भाई को भूखा-झुलसता देखें कहाँ की मानवता है
कौन अपने हथियार बेचने को हर मुल्क में जाफना तैयार
करता है ?

ऊपर महल

ऊपर महल में सव एक है
    जरूरत पड़ी तो तुम्हारी आवाज़ कुचलने के लिए
        वही असले आयेंगे जिन्हें
        दाँतों में रखने से तुम्हें भड़काया जाता रहा है
    मदारी के डमरु और बंसी से कभी
        सोनागाछी में, क्रान्ति आयेगी ?

        अरे ये, किस्से-कहानियाँ
            रेखायें-वार्त्तायें
                विवाद-चरण
            सव ववण्डर है
    तुम्हारी आँखों का दीवाला पीटने के लिए
नहीं तो क्या
    दहलते नागासाकी से प्रशान्त महासागर सुरक्षित है ?
    वियतनामी गुप्त कब्रगाहों की खोज से युद्ध बन्द हो गये ?
    ये पौराणिक कथाओं के मसाले लगे भाषण
    ये जज्बातों को उखाड़ने वाले चटपटे उपदेश
    ये जाति-देश के नाम पर उबालने वाले कोरे सन्देश
ऊपर महल में सब एक है ।
स्वांग करती डमरु और बांसुरी ।

    तुमने कभी रुपये का सिक्का हथेली में नहीं कसा
    फिर आँख के सामने रख उसमें झाँका नहीं ?
तुमने देखा होगा
    उँगलियाँ उसी तरह पत्थर हो जाती हैं
    जैसे ट्रिगर पर

निगाहें उसी तरह अन्धी हो जाती हैं
    जैसे सूरज ताक कर
फिर तुमने देखा होगा
    लोहे की चद्दरें काटते चिज़ल का सर
    हथौड़ों की मार से भत्थ हो जाता है

पेट में आग लगती है
    तब तुम तलाश करते हो
    कहाँ रोटी बड़ी और मोटी पकती है
    कहाँ साथ में तरकारी फ्री मिलती है
खेत सोना उगलते हैं
तो तुम्हें धोती रेशमी मिलती है ?

    ···अरे, ऊपर महल में एब एक है !
    ढाह दे रे, ढाह दे
    तेरे लिये बनाये गये सारे
    जेल, कैदखाने
    कानून के ताले और थाने

खैरासोल का कब्रिस्तान

यह एक बहुत बड़ा सच है
खैरासोल कब्रिस्तान की तरह
घर लौटते बस जिस कदर भरती है
उसमें खड़ा रहकर इंसान
अपने तलवों पर भरोसा नहीं कर सकता
फिर बातें जब धुलती चली जा रही हैं
किसे फुरसत है कि दो मिनट मौन में
वयस्क आत्माओं से जिरह करें
आदमी पीछे से चढ़कर
आगे उतर जाता है
पर उम्र के मैदान में ठहरा हुआ पानी
आखिरी धड़कन तक गंधाता है
धान पैदा हो या न हो
खैरासोल का कब्रिस्तान
हर इन्सान की राह में आता है।

कबूतर-दड़बों का चाँद

हाथ में रोटी और दूध की बोतल के सिवा
मैंने चाँद को चाहा है
जिसकी हल्की ठंडी रोशनी में दरख्त
कबूतरों के दड़बों में खुसफुसा रहे होते हैं

सड़क के किनारे-किनारे मीलों चलते मैंने महसूस किया है—
आदमी कभी जब टूटता है
धूल नहीं उड़ती
न मस्जिद के गुम्बदों में चीर आता है
बस, एक सूनी हथेली का फैलाव इतना तनता है
कि पहाड़ के पहाड़ रेत के ढेर से फिसलने लगते हैं।
आदमी टूटकर एक पत्ता, एक डाली भी नहीं बनता
गौरैया की चोंच में दबे तिनके-सा उसे ये उम्र
घोंसले उजाड़ने वाले वन्दरों पर फेंक जाती है
तब गीता के उपदेशों में कहीं इस बात का जिक्र नहीं होता
कि आदमी टूटने के डर से कपड़े नहीं बदल सकता
हाथ में रोटी और दूध की बोतल ले किनारे हो जाता है
चाँद चाहता है और मीलों चलता जाता है
टूटता है पर कबूतर के दड़बों की तरफ
आँख उठाकर भी नहीं देखता, जहाँ
हल्की ठंडी रोशनी में दरख्त खुसफसा रहे होते हैं।

गाँधी मैदान

शहर के बीचों बीच खड़ा मैदान
जोर से ठहाका लगाता है
जैसे उसकी लंगोटी खुल गई हो !
इसकी गोल चौहद्दी के साथ सटकर
जो गधे मूतते हैं
घरघरा कर पसर जाते हैं
और पास की आवारा छत से सत्तू माँगते हैं।
वहीं देहाती रोटी खिलाती लछमिनिया
मैदान की पकड़ में देह ढीला छोड़ देती है
गाँधी मैदान एक कोरा गुदगुदा
नीला सूचना पट्ट बन जाता है।

खामोशी

इधर खामोशी मेरे कदमों की आहट सुना करती है
उधर मैं इसे अपने जिगर पर पैर रखते महसूस करता हूँ

कोई हवा जब सूखी पत्ती से खड़खड़ा उठती है
मेरी उँगलियों का मौन चौंक पड़ता है……
दिशाहारी आशा लड़खड़ाती चाँद छूने को मचल उठती है……
आकाश का एक टुकड़ा मेरी छत पर नहीं लग सकता ?

किसने कहा था यह जिन्दगी
बुरादे लिपटी वर्फ की सिल्ली-सी पिघलती रहे
और मैं नब्ज में खून को भरता
खाली होता देखता रहूँ
मेरी देह में नीता जहर उगलकर ख़ामोशी
कैसी मादा सूअर-सी सुस्ता रही है ।
हर रौशनी के धूल-धूल होने की यही वजह है तो
इस कब्र पर भी मशाल लिये
अन्धे पहरेदारों को गश्त करने दो ।

मुझे कुछ नहीं चाहिए—मैं सुबह की ओर
खत्म होती आवाजों में शामिल हो लूँगा
और अमरबेल—सी फैलती इस चुप्पी को
कैप्सूल की तरह हलक में उतार लूँगा, पर
माँ का दूध चूँसने का स्वाद मेरी जीभ पर
अमृत चुआने से भी नहीं आयेगा……

किसी कुतिया के थन पर दाँतों के निशान उभरने से पहले
    लगातार धँस रही यह खामोशी की मंजिल उभर ले
सन्तरे के छिलकों पर पड़ी टट्टी जैसी यह खामोशी
रात के महीन सूराखों में बदबू मार रही है
मैं यहाँ से भाग जाऊँ तो भी खामोशी
    मर गये बच्चों को डायन-सा खेलाती रहेगी······

वर्ष शेष

वर्ष आखिरी सीढ़ी चढ़कर
आ गया है छत पर
भ्रातृ-द्वितीया के बाद
रौबदार गाँठों वाले पेंड़ की तरह
झड़े पत्र-दिवसों से बेपरवाह !
    ...शेष हैं और दो माह
    उतरेगा ये दिन
    जैसे बोझ लादे सिर
    हाँफता दौड़ता है
    कुली ढलान पर !

वक्त

समय के गले में डाल देने को मेरे पास कोई जंजीर नहीं
समय की बेड़ियाँ खोल देने को मेरे पास कोई तदवीर नहीं

पूछताछ काउण्टर नंगा खाली पड़ा है
और उधर चाँद पश्चिम के अहाते में
एक जोड़ा वादलों बीच

सोये में खुल चुके हैं बटन
बेपनाहों को थपकियाँ देते प्लेटफार्म के
वह उठी, अब जनता की बारी है !

सामान और अमीर यात्रियों को मुँह बाये
सीढ़ियों से डिकी सटाये
टैक्सियाँ !
देर से आने वाली
नहीं, यही तो समय है
दूर से आने वाली रेलगाड़ियों का,
डाक के थैले अलसाये अँटे
ठेलों पर इंतजारते
मुआवजा वसूलते टीटी शिकार सूंघते
कैसा समय है ! हाथ लगाते भुरभुराता
लोनखाई बूढ़ी दीवार-सा
खाजखाये स्टेशनी कुत्ते की तरह—न गुलाम, न आजाद
इसके गले कौन डालेगा जंजीर···ऊँह !
ढेर-सी ओस बरसेगी
फिसलन चढ़ेगी सर्द पटरियों पर
छाई पर एक ठंडी लाश-सी पसर जायेगी रात

Indian Institute of Advanced Study
G-5364
7/11/03
SHIMLA

काँपेगा जाड़े में पूरबी आकाश
सूज जायेगा सारा खून मुँह पर खींच
वक्त तब भी जकड़ा होगा बीमार
गंधाता लड़खड़ाता
बेड़ियों में···हुँ ! किसे परवाह ?

पूजा का नाम

आँखें स्वतः मुँदने लगती थीं
पैर बरबस खींच कर तुम्हारे
सामने खड़ा कर देते थे
तुम्हारी
या तुम्हारे जैसी
किसी भी मूर्ति पर फूल चढ़ाने
हाथ जुड़ते जाते थे
हमारी देहों के बीच रखा दीया
वक्त का एहसास करता था

तब मैं तुम्हें गोद में भर कर
नंदा देवी की बर्फ पर लोटने लगता था
मैं चाहता था
नदी के तेज बहाव और धूनियों में
बालू में दबी सीपियों का अतीत बन जाऊँ
पाषाण युग का भोंथरा औजार छाती में
चुभने से ज्यादा धँस रहा था
मेरी आँखें भीगने लगी थीं
पुजारियों की भीड़ से मैं पूछ रहा था
इस पूजा का क्या नाम है ?

…मिट्टी की देह को मोम की तरह
हर साँचे में ढालना
हर कबूतर के भार बराबर
अपने मांस के बटखरे काटना

…मैं देख रहा था

जिन्दगी भर की साधना में तुम्हारा
कोई नाम नहीं बचा तुम्हारे लिये
इसका कोई मतलब नहीं

तुम मुंडकटी प्रतिमा बन चुकी हो
पूजा का नाम सिर्फ भीड़ की सुविधा के लिये है।

सूर्योदय

इस्पात पिंड-सा निकला है सूरज
पूरब के मोल्ड से : रक्ताभ !
क्षितिज की ट्राली पर टिका दिया है
प्रात की बलिष्ठ क्रेन-अँगुलियों ने,
दीवार पर बन रही हैं सिंदूरी काँचवाली खिड़कियाँ !
मिनटों में गर्म हो चमकने लगा है
लेजर किरणों से ताया हो जैसे
लाल ओझल हुई सफेद विकिरण में
सोकिंग पिट से निकाला हो जैसे
हँसता
समंदर-सा उछलता
सिक्ता-तट पर बिछने को उन्मत्त जैसे !

भीड़

ये भीड़ जो अक्षरों की मानिंद
सब-वे कैफे के वगल से गुजरती जा रही हैं
कव एक-दूसरे को मरने-मारने पर उतारु हो जायेगी
रोटी से खिचकर।

लावारिस छोटी लड़कियाँ जिनकी छातियाँ
अव फ्रॉक के नायलनी कपड़े को धक्के मार रही हैं
प्लेटफार्म पर खड़ी गाड़ियों की वोगियों में
घुसने से पहले वतिया रही हैं
कमर में टनटनाहट बज रही है
जिस्म थकान में ऐंठते हैं
भीड़ के कँधे छीलते हैं,
एक भूचाल चाहिये
जो सब कुछ वहाँ रख दे
जहाँ होना चाहिए
एक झटका चाहिए
ताकि वह कविता लिखी जा सके
जो पार्क सर्कस के बाहर
ब्लू फिलम दुहराती भीड़ लिखने को उतावली है।

भारत की तस्वीर जो प्रथम श्रेणी के डिब्बे में है
वह यहाँ क्यों नहीं
क्यों हर सुन्दर लड़की का चेहरा डरावना है
सपने में नंगा दौड़ता रहा हूं
गंजी खींच-खींच इज्जत छिपाता

और यहाँ भीड़ में इज्जत सिर पर रखे
हर आदमी को नंगा
थकियाता देख रहा हूं
हर कोई चाहता है दूसरे को चूस लेना
दया लिखकर, दया दिखाकर
या दया माँगकर

सब-वे

घर लौटते हुए लोग नीबू का जोड़ा
खरीदने वापिस मुड़ते हैं,
सब-वे की सीढ़ीयाँ उतरना शुरू करने से पहले
चेहरे पर दरवाजा चमक उठता है
कुछ उगलने से हिचकिचाती/जेवों का
गला घोंटकर/विटामिन सी से भरपूर
दो गोल खट्टे फल
(एक महँगा होता है)
गृहस्थी से जुड़ने का रास्ता वन जाते हैं···
···इस तरह वे उतरते हैं
मंथली फिर बनवा लेंगे सोचकर।

इसी तरह चारों तरफ से सब-वे में घुसती है भीड़
प्लेटफार्म के दाखिले वाली महासीढ़ियों पर
एक दूसरे पर अपने चेहरे फेंकती।
ठीक बीच में अंधा
(शायद ट्रैफिक की तरह।)
अपने गमछे में गड्ढा बनाते
पूरी दिलचस्पी और तन्मयता से
उस फर्क का हिसाव लगाता है जो
कदमों की भारी आवाजों
और सिक्कों के हल्केपन में होता है
भीड़ माँग-सी उसके दोनों बगल बँटती है
गमछे के बेलिहाज फैलाव पर !
एक अंधी चुप्पी होती है !

मुझे वर्मा की बात याद आती है—
खुली चीज नहीं खानी चाहिए
मुँह ढँक लेता हूं।
आज इसे ही खाऊँगा !
फिर लौटता हूं सीढ़ियों के पास
घर से आते इन्हीं पर चढ़ा-उतरा था
कीड़े-मकोड़ों के बीच तब
चीटियों को बिल से लगातार असंख्य होकर निकलना
कोई अचंभा नहीं लगता
संगठन लगता है
सीढ़ियों के पास बिखरे हैं चिड़वा-मूड़ी
उन पर बैठी हैं दो औरतें उकड़ूँ
पोटली पास धरे
क्यों बिखेरे हैं दाने उन्होंने
कसैली बदबू चिपकी है रुमाल से
सारा दिन धुआँ इकट्ठा होता रहा है
होठों के दरम्यान
कलेजे के बीच
मुँह ढँकने के लिये अब दांत
उँगलिया नहीं बर्दाश्त करते
आँखें डरती हैं खुली चीजों पर मँडराने से
जेबों के बीच बेतरतीब उलझा
दस पैसे का सिक्का, सोचता हूं—
वजन कर लूँ या दो कर लूँ
मुन्ना तो हमेशा भारत माँगता है
जो पांच पैसे में भी होता है…
एक नींबू ले लूँ
फिर लौटता हूँ सीढ़ियों के पास
सब वे में घुसने से पहले।

घुड़सवार

है,
एक आदमी है
जो घोड़े बेचकर सोया है
कूलर की ठंढ खाता।
शायद मैं वक्त से पहले चला आया हूँ
वह घंटी की आवाज नहीं सुनता
घर सुनता है।
घर उसको नहीं जगाता,
डरता है
घर उस पर चलता है।
कई बार बटन दबाने पर
दीवारें कुनमुनाती हैं,
झनझना जाती हैं।
आदमकद शीशा दूर से ही जज्ब कर लेता है
उसे नहीं उठाता, डरता है
सवार दोनों टाँगें फैलाये है।

मैंने अपनी आँखों देखा है
एक आदमी है
नींद में घोड़े पर सवार
दूर······दूर निकल गया है
शायद दिये वक्त तक
वह लगाम फेर ले
वापस घोड़ा दौड़ाता
कूलर में घुसा दे
और टाँगें मोड़कर उठ बैठे।

अंदर की बात

बाहर धूप है, अंदर सुख ।
गर्मी को चारदिवारी के बाहर रोकने को सारे सरंजाम हैं
इंतजाम हैं तल्खी को सड़क पर ही अधमरा करने के
गुलमर्गी ठंढक और जन्नते-सुकून को हाजिर करने के
बंदोबस्त हैं अंदर,
पस्त हैं खेतों में बीज बोने वाले
चिलकती धूप में बोझा ढोने वाले
त्रस्त हैं अपनी आवाज़ दीवार तक पहुँचाने में ।

दीवारों के कान उनकी बुदबुदाहट
घंटियाँ बजा देती है अंदर
सुरक्षा संकेतों में बदलकर
संगीनें मुस्तैदी से पैर पटकने लगती हैं
तन जाती हैं खास-खास ठिकानों पर
सभी प्रवेश-बिंदु सख्त हो जाते हैं
तापक्रम उबलते हैं ।

एक हादसा होता है
होता है कुछ ऐसा
मुट्ठियाँ ढिला जाती हैं ।
एक बड़ा खतरा सामने देखकर
स्खलन हो जाता है
बाहर पक रही तपिश का

कंडीशनर तपी हवा चूसकर
थूक देते हैं सड़क पर

अंदर सुख है
बाहर चिलचिलाती धूप।
गर्मी तापक्रम की उँचाइयों से नीचे बहे
तो कैसे
सारा तंत्र है, प्रपंच है
उसे चारदिवारी के बाहर रोक देने का।

वतन

काली गड़गड़ाहट हो या नीला तारा
जुल्म के खिलाफ सनसनी होती है ।
मिहिरकुल ने जो हाथी पहाड़ों से लुढ़काये
वे सैंतालीस राईफलों में तब्दील होते हैं
जनता मुक्ति के लिये बढ़ती है

काला पुण्डरीक बढ़ता है
जंगलों, नदियों, तलहटियों में
बात एक हो तो
आवाज़ बुलन्द होती है ।
धार तीखी होती है दुश्मनों की
पत्थरों-चट्टानों पर चलती रहे
धार खुद कुंद होती है

जनता मुक्ति के लिये बढ़ती है
अपनी गर्दन से उतार फेकने अंग्रेजी जुआ ।
हमें अपना वतन दो वापस—हिंदुस्तान
कॉलोनी नहीं
विदेशी पूँजी को चारागाह नहीं ।

स्टॉकयार्ड

आत्माओं की शांति के लिये आओ
हम थोड़ी ऑक्सीजन हवा में वहा दें

ढर से कागज कहीं दबे पड़े हैं
और उनमें वह लिफाफा भी
जो विदेशी है
पर जिसके अंदर कुछ नहीं
न विदेशी
न स्वदेशी
आओ उन महान हस्तियों की याद में
हम मौन धारण करें
और ध्यान से हवा में
ऑक्सीजन का हाथ-पैर छोड़ना देखें
देखें कैसे वह ताबड़-तोड़
वायुमंडल पर लात घूँसे बरसा रहा है
उन आत्माओं की शांति के लिये।

कैसे उसके दवाव से
उँचे-उँचे घास और टहनियाँ
जड़ समेत हिलती हैं
देखें कैसे यकायक
हाइवे के बल्ब बम की आवाज में
फूटते हैं
यहाँ की योग निद्रा भंग करते हुए
देखें कैसे गायें इकट्ठी होकर
ऑक्सीजन छूटने की आवाज में हगती हैं

कैसे गोबर का रंग सख्त पीला होता
लोहे के बुरादे में घुसता जाता है

शांतिमय सन्नाटा है
जो उनकी आत्माओं के लिए हृदय विदारक है
देखें कैसे आफिसपाली की बसें छूटने के बाद
भड़कीली पोशाक पहने रंडी की तरह
बेकामी उछलने लगती है
देखें कैसे इनसेट वन वी से छूट रही तरंगों के साथ
सिर हिला हिलाकर यहाँ की
सुस्ती और अनुपजाऊ जन शक्ति
बेचैन होती है
और शाम न लिपट सकने वाले पानी के पाइप-सी
कठोर होती गड़ने लगती है
चाँद एक पुड़िया होमियोपैथी दवाई की तरह
बँधा सिकुड़ा रहता है
और उस पर एक तारा
खुराक नम्बर सरीखा
दस बजने की घड़ियाँ गिनता है
उनकी आत्माओं की शांति के लिए

एक दिन जिस दिन

जिस दिन तुम्हारे मन में अच्छे विचार उभरने लगें
समझना तुम्हारी पूजा सफल हो रही है,
जिस दिन दूसरे की बोली से मोह होने लगे
समझना तुम्हारी भाषा सफल हो रही है,
जिस दिन हर इंसान तुम्हें सगा लगने लगे
समझना तुम्हारा धर्म सच हो रहा है।

मजहब इससे ज्यादा और क्या कर सकता है
कि तुम्हें अपनी पहचान करवा देता है—
महासागर के तट पर एक सूखा सिक्ता-कर्ण
आकाशगंगा की विस्तार यात्रा में खोया एक तारालिंग।

जिस दिन हर प्राणी तुम्हें ईश्वर लगने लगे
समझना तुम्हारी नमाज़ कबूल हो रही है
जिस दिन तुम्हें औरों के भूख की चिंता होने लगे
समझना तुम्हारा रोज़ा सार्थक हो रहा है
जिस दिन सबका दर्द तुम्हें दुखाने लगे
समझना तुम्हारा हवन ईष्ट को मिल रहा है
सन्यास की जरुरत नहीं, जिस दिन मन वैरागी होने लगे
समझना तुम्हारी साधना पवित्र होने लगी है।

बचपन

दाँतों को फिर उगते महसूस किया
मसूड़ों से झाँक-झाँक कर
बचपन ! सबसे ज्यादा लगाव तुझसे क्यों है ?
जिंदगी के आखिरी घूँट भी अपने आप से संतुष्ट क्यों हो ?
तुम न होते तो शायद हाथ पैरों पर ऐतबार खो जाता।

चाँद तारों से सहलाकर यकीन न आता
कि माँ-बाप गुड्डे गुड़ियों का खेल रचते हैं !

आज छिपकली घुसी है रसोई खाने में
क्या दिनों के अलावा कुछ और है
जिसे खाकर वह पेट भरेगी

सबसे पहले एक कन्या थी
फिर एक पुत्र
किसी के पल्ले कुछ आया था तो लड़खड़ाहट
तुतलाते कदम यहाँ मेरी छाती पर भी पड़े थे।
और तब से आज तक एक आलोचना है
जो नंगे पाँव
थूथन से जबड़ों तक एक पहर रहती है
दूसरे पहर सिर के उपर से ले जाकर
कान पकड़ता हूँ
उम्र का लिहाज दूसरा कान फेंक देता है ?
दाखिले के वक्त एक उम्र तय होती है
जो कमती बढ़ती नहीं, वहीं रहती है
पास होते-होते

कितनी दहलीजें गुजर जाती हैं
फेल होती है तो जिंदगी
नहीं तो किसी भूल चूक का बनिया
फिर हिसाब करता है
जो बच रहता है वह किसी के साथ मरता है ?

लोहे की रोटी

रोटी लोहे की होती है ?
लोहे की तरह मैलीएवल चकले पर
बेलन तले जहाँ दबती
पतली होती चली जाती
किनारे गोलाई पर मोटी रह जाती
चारों ओर समान रुप से कैसे चले ?

हाथ को इस कायदे से घुमाया जाता
बेलन एक घूर्ण देता चलता ।
अधिक जोर लगता जैसे-जैसे मोटाई कमती जाती
लोहे की चादरों वाला सिद्धांत लागू होता
अत्यधिक ड्राफ्ट से रोटी फटने लगती
घी से चुपड़ दो
उपस्नेहक का काम होता
और अधिक फैलती
एक खास लचक जरूरी होती
नहीं तो बेलन से लिपट जाती
थोड़ा सूखा आटा लगाते
रगड़ बढ़ती
रोटी सलीके से फैलती, जैसे
रोल्स के बीच बालू झोंकते
लोहे की पतरी बनाते ।

लोहा और रोटी
कितनी समान दो चीजें !

लोहे को सफेद गर्म करना पड़ता बेलने के लिये
आटे को नर्म कर गूंथ लेना पड़ता बेलने के लिये

आटा क्या है—पिसा हुआ गेहूँ
लोहा क्या है—ढली हुई गंदगी रहित मिट्टी
पिघला कर, जमाई हुई

गेहूँ कहाँ से आया ?
मिट्टी से, मेहनत से, इन्सान ने जन्माया
लोहा कहाँ से आया ?
मिट्टी से, मेहनत से, इन्सान ने जन्माया
इंसानी मेहनत—रोटी का लोहा।

रोटी इंसान को मेहनत करने का
बल देती, बुद्धि देती है
लोहा इंसान को, मेहनत करने का
रोटी की हिफाजत करने का
ईरादा देता, दृढ़ता देता है
फिर क्यों लोहे की बनी रोटी
मेहनतकश इंसान के वास्ते ?
लोहा गलाने वाले इंसान के वास्ते
क्यों सवाल बनी रोटी ?
मेहनत की रोटी
रोटी उसका एक
लोहा उसकी मेहनत
रोटी उसकी मेहनत
उसका लोहा छीनने वालों का बेड़ा गर्क !

पापीया से

हिन्दुस्तान खाली चोर दलालों का नहीं
कुछ तो हमारा तुम्हारा भी है
झूठ का प्रचार करकर वे उसे
सच बना लेंगे पापीया !
पर यह क्यूँ नहीं समझती
तुम्हारी आवाज सिर्फ सच नहीं
एक जरूरत है

आदमी दिन को माने न माने
सूरज को मानता है
यह एक निजी जरूरत है ।

यहाँ एकाधिकार की भूख है
सत्ता की भूख
इसलिए कालाबाजारी व्यापार में ही नहीं
पढ़ाई-लिखाई, बोलने-गाने
नाटक और कविता में भी है
हमें उस तन्त्र को तोड़ना है ।

तुम अपनी आवाज को बुझने न दो, बस
मुझे इसमें सन्देह नहीं-कल तुम्हारा है

बस, छाती धड़कती है कि
इस गर्दिश और अँधेरी के बाद
जब दुनिया तुम्हारे लिए अधीर होगी
सुनने को
कहीं तुम डूब न जाना
प्लीज पापीया !
अपनी आवाज बचाये रखना !

उधर का हिसाब

कुल इधरे का जोगा रहे हो साधो
कुछ उधरो का जुगाड़ करो

मौज मेला तो साँसे भर का है
अँखिया बन्द होते
डिब्बा गोल हो जायेगा
तब सुगवा को जेतनो बुलाओगे,
लाखों ललचाओगे
नै आएगा·······

इधर का हिसाब-वही
उधर का मुन्शी नई समझता
गिनती का टैम शेष हो जइते,
    उधर का सिक्का कुछ कमाय लो
    काम आ जायेगा,

गाड़ी बंगला शान-फुटानी :
    भाप नीयर
नौकर-चाकर रिश्ता कलक्टर
    परभाती जैसन
अँसने है
बतिया करते बिला जायेगा

साधो, देख तो रहइए हो
काहे को मूरख अजान बने हो
कुछ उधरो का सोचो
इधर तो सबको सब नहीं ए मिला है ।

घमौची

सर घमौची से भर गया है
बालों की जगह
माँ, तेरा अपाहिज हाथ खुद उठा था विदा कहते
या कि वायें की मदद थी ?

खौफनाक दृश्य है
कठिन ध्वनि के साथ स्वत:
वन्द हो जाता है टेम जैसे
विलीन नहीं होता चित्र
दिमाग की नसों में वसा
यही विन्दु है
जहाँ वैराग्य का समंदर उमड़ पड़ता है
मोह से भी ज्यादा गहरा क्या है ?
चिन्ता के वाहर भी तो
अन्दर जितना तीखा यथार्थ है ।

पंगु है आलीशान महल
सच के पायों विना/रक्त-चाप भूकंप के झटकों-सरीखा हिलाता है
छत के काबू में रहने का अर्थ होता है
सर का घमौची से भर जाना
बालों की जगह

बस का खत्म होता सफर

सूरज हमें अपनी तरफ ले चल रहा है
खिड़की पर रंगीन जाल बुनता हुआ।
उसके सँग ही तो हम उठे थे
बिना कुछ खाये सफर पे चले थे
कंधों से सिर पर सरकता हुआ
अब आँखों के सामने ढल रहा है।

हम थकान से भरे हैं पर
मुकाम पहुँचने का उत्साह मचल रहा है
सूरज हमें घर की तरफ ले चल रहा है
काँच पर किरणों के रेशे उधेड़कर
रंगों के धागों में पिरोता हुआ
जंगल में पेड़ों के बीच छुपता-निकलता
बस को एक उँगली थमाये भागा चल रहा है।

अब तो कितनी मोटी हो रही हैं छाया की लकीरें
खेतों में ठहरे पानी पर
झाड़ियों पर रौशनी पड़ती है तो
निकलती नहीं, वहीं दुबक जाती है
डालियों के जोड़ों में अँधेरा अंकुरित होता
पत्तों के बेचमक रंग में तब्दील हो रहा है

थोड़ी गहराई में पथरीली नदी की धार
सलेटी काई बने हवायें फिसलाती हैं
जमीन की सतह तक पहुँचने से पहले ही
किरण महीन धूल-सी बिखर उड़ जाती है

सूरज ने दिन-भर हर शै के गिर्द जो जाल बुने
उनमें फँसा कर उठा लेने की कोशिश में हाँफ रहा है
हा ! कुछ भी नहीं उठ सकता आज आखिर
और मजबूत जाल बुनने की ठान कल
बस के हिचकोलों को अपनी अँगुलियों पर सहारता
लगातार आगे की तरफ ले चल रहा है।

रात

रात क्या होती है ?
वह कोई और शै होती है
जो आदमी को नींद में रखती है
सपनों की दुनिया में पैर पसारे
खासे चंगे इन्सान को निकम्मा बना देती है
बदन की थकान का बहाना बना
दुरुस्त होशो-हवाश थका देती है
नई ताकत-ताजगी का लाश लगा
भारी गफलत में डुबा देती है
सूरज चढ़ने-छुपने से क्या ताल्लुक
रौशनी की समझ हटा देती है
घंटे दस-आठ का हिसाब नहीं
पूरी दो पीढ़ी का इतिहास रात होती है ।

पहला अक्षर

सर कनस्तर की तरह साफ हो गया है
चमड़ी चिकनी मिट्टी की तरह पपड़ा रही है
खुद को भौंचक्क होकर देखती आँखें
मिचमिचा जाती हैं
होठों पर एक अफसोस
खतरनाक चुप्पी बनता चला जाता है
दूर पीछे तक ।

क्या इसी तरह एक दिन जिन्दगी
आखिरी हद तक खाली हो जायेगी
तेल के खाली डिब्बे को उलटने की तरह
नहीं उतरेगी एक बूंद हरकत जिस्म से

बता समन्दर कितनी स्याही है तुझमें
ला, मैं पी जाऊँ तुझे
सिर्फ एक सफे के लिए
जिस पर सिर्फ एक नाम है
बल्कि उसका सिर्फ एक अक्षर
एक मुकम्मल विज्ञापन की तरह

कहाँ है कोई सपना, कोई मजबूत इरादा
जीने का पहला अक्षर बने जिससे
बेशर्म उम्र तो इतना सब खा चुकने के बाद भी
कहेगी–"क्या है खाने को ?"
क्या है मौत के लिये जवाब अपने पास
उसका कठिन है हिसाब
जोड़ के नाम पर बस एक अक्षर
और बाकी सारा कुछ घटाव ।

मज़हब

मज़हब गर सिर झुकाने से बनता
तो सिलाई कारखानों में बनता
गल्ला गोदामों में बनता ।

ये जो निकली हैं हड्डियाँ करोड़ों साल पुरानी
भगवान की नहीं ।

बच्चे के जब दाँत निकलते हैं
आँतें मरोड़ खाती हैं
ईबादत दूध चूँचने शिशु के दिल से होती है ।
धर्म के दाँत निकलते भगवान चरने लगता है
फिर करोड़ों वैसे अबोध दिलों की हत्याएँ करता है
जब उसके मुँह से खून लगता है
मज़हब आदमखोर हो जाता है ।

धर्म के एक हाथ में है भगवान की गर्दन
दूसरे में है निश्छल आकाश
इन्सान के एक हाथ में हैं दाँत
और दूसरे में अबोध बच्चे की मानवता ।

अंधेरा ज्यादा है

वक्त ज्यादा नहीं अँधेरा ज्यादा है
जिसे चीरफाड़ सकते हो अपने तेज कदमों से
किसने कहा रात आराम के लिए होती है
तुम्हें दिन-रात चलना है—
दुनियों के कायदे इतनी आसानी से नहीं बदलते

कोई संवाद नहीं मिलेगा
कोई ईशारा, कोई नेक सलाह
कोई निर्देश नहीं मिलेगा
सिर्फ अंधेरा होगा
धरती पर, आसमान पर
विशाल जबड़ों की तरह

कई बार तुम्हें भ्रम हो सकता है
अपनी जिद की व्यर्थता का
अपने बेकार हौसले का
पस्तहिम्मत न हो बैठना
ऐसी ही होती है रात
यही तो फरेब है सूरज वालों का
कि तुम्हारा दिल टूटे
और सुबह तुम बुझ जाओ
जो तुमने देखा है राजे अंधेरा
वता न सको—
और वे उजाले में भी
वही अंधेरा ताने रखें

4

मंजिल है मेरे दोस्त ! मंजिल है
वहीं
तुम्हारा इस्तकबाल करने को व्याकुल
बढ़ो, वक्त ज्यादा नहीं
अंधेरा ज्यादा है
जिसे तुम फाड़ सकते हो
    अपने तेज कदमों से

मक्खन

और मेरे दोस्त, तुम यह जान लो
कि मक्खन कमरे के तापमान पर ही
पिघलने लगता है
जिसमें ज्यादा लोग रहते हैं
और इसलिए कोई ''गर तुमसे कंधा माँगे
तो तुम यह जरूर देख लो
कि शिकार कौन है

कल बंदूकची तुम्हारे साथ नहीं होगा
पर जिसका खून बहा है
वह मर कर भी तुम्हारा कंधा हिलायेगा
जब तुम मुँहध्यान खडे होगे
या भाग रहे होगे
तुम्हारा गरेबाँ खींच लेगा
इसलिए दोस्त, मक्खन या कंधे की राजनीति
अमल में न लाओ
और यह देख लो
वह 'गर नकाब पहन सकता है
तुम्हारी अँगुली के बूते
तो ऊँगली उठने से पहले
यह चोखने का दम रखो
कि तुम इसे तोड़ दोगे।

मंडी

कुछ मूर्त्तियाँ कम गई हैं इस साल
कुछ बढ़ गई होंगी रंडियाँ
कलकत्ते में बदहाल
निकला है शिकारी एअरगन ले
होने को मालोमाल ।

खूब है हवा
तितलियाँ हैं एक गादा उड़ रहीं
हल्की-हल्की ठंढ का लिबास ओढ़े
जल गया है पंडाल
हुआ शार्ट सर्किट इसी तरह जिंदगी में
जला घर-बार
वे जम गई हैं राख हुई

दुबारा बन जायेगा पंडाल
पर रिसेगा उनके जीवन का अकाल
मूर्त्तियाँ कम गईं कलकत्ते में इस साल
रंडियाँ बढ़ गईं
बांग्लादेश और आसाम की बदहाल
इन मूर्त्तियों की शरण कहाँ
कहाँ इनका पंडाल
करे इनकी पूजा कौन
इनका कैसा साल ?

निशान नंबर–३

जगह-जगह खतरे के निशान नंबर–३ झूल रहे हैं हमारे लिये
उनके थके हुए खून और सड़े विचारों के लिये
स्वागत द्वार सजाये जा रहे हैं
चौराहों पर उनकी तस्वीरें चिपकाई जा रही हैं।

राहत केंद्रों में पहुँचने से पहले
दवाई और खाना उनके पेटों में जा चुका है
हमारे बच्चों को मलबों से निकालने वाला कोई नहीं।

कम दबाव का एक वृत्त जो हमारे कस्बे में बना था
अब बंदरगाहों की ओर बढ़ गया है
विरोध का एक बगूला जो उठा था
धीरे-धीरे उसका रिसाव कोठों में हो रहा है
गड़बड़ी वाले इलाके घोषित कर उन्होंने
विचारों की नाकाबंदी कर डाली है
कर्फ्यू की आँधियाँ चलाकर उन्होंने
हमारा काम-काज उजाड़ दिया है
अब हमारे पास सेनें के लिये कोई अंडा नहीं
बुनने के लिये कोई सपना नहीं
वे हवाई उँचाईयों से हमारी
सूखी धरती और बाढ़ की लपटों का सेंक
विश्व सुन्दरियों की जाँघों में पहुँचा डालते हैं
सारे पड़ोसी भेड़िये एक जुट हो
हमारी तकलीफों का एक वाद बना डालते हैं
समस्याएँ सुलझाने के नाम पर
हमारे जवानों को नोंच-भून डालते हैं !

असन्तोष

कुछ नहीं कर पाने से ही असन्तोष होता है
वरना जीवन तो घड़ियों का मुहताज होता है
इस तरह या उस तरह कट ही जाता है
जितना लिखा होता है, कहीं अगर

कभी घास देखता हूँ
जिसे कितने प्यार से पटाया जाता है
जिसके लिये मशीनें और खाद
और तरीके विदेशों से आते हैं
जिसकी खूबसूरती पर पूरी संस्था
सारे वैज्ञानिकों की इज्ज़त का सवाल है ।

कभी आस-पास देखता हूँ
आदमी फटेहाल पगलाया सड़कों पर घूमता है
पिल्लों-से भिखारी बच्चे फर्श चाटते दब मर जाते हैं
कोई पूछने वाला नहीं
किसी हमदर्दी का सवाल नहीं

कभी कुत्ते देखता हूँ
उनके लिये देशभक्ति का क्या मतलब है
जबड़ों में चूती जीभ और पूंछ की सरगर्मियाँ
हवाई सैर, काले खाते और विदेशी लौण्डियाँ

कोई दर्द नहीं
गरीबी बेरोजगारी
सूखे और बाढ़ में पिसती जनता का
किसी तरह चुनावी जीत का सवाल है ।

कुछ सही कर पाने से संतोष होता है
जुल्म के खिलाफ उठाया कदम छोटा ही सही,
सही होता है
वरना जीवन तो घड़ियों का मुहताज होता है
इस तरह या उस तरह कट ही जाता है
जितना लिखा होता है
कहीं अगर.

घर की सफाई

नदियों-सी जा रही तारों पर
जिनमें बहती है बिजली
मकड़ों ने फैला रखा है चक्र-जाल ।
पंखे के चौगिर्द घेरा डाला हैं
जैसे हवा पर कब्जा करने को,
ताकि इस घर को ठंढक न मिले
शान्ति न मिले ।
गर्मी में बिलबिलायें
उमस में सड़ें
और आपस को नोचें ।

हवा का बड़ा हिस्सा तो यह खा रहे हैं
घर वाले एक दूसरे को गरिया रहे है—
कि सामने तू खड़ा है
तूनें हवा को रोक दिया है ।

मैं झाड़न उठाता हूँ लंबे डंडे वाला
और तोड़ता जाता हूँ मकड़जाला
जाले पंखों में लिपटते घूमते जा रहे हैं
मकड़े जान बचाने की कोशिश में
भागते नजर आ रहे हैं
मैं पीछा करता हूँ
और वहीं दीवार पर धर दबोचता हूँ सिरे से

एक नीचे गिर कर स्मगलर की तरह भागता है
मैं निशाना लगा वार करता हूँ,

बच निकलता है शेर
पनाह लेता है मेरी किताबों में
आज मैं उसे नहीं छोड़नेवाला
गछ लिया है मैंने घर की सफाई
हो तो मुकम्मल
वरना यही अकेला साला
इस घर में फिर भूचाल लायेगा
फिर रौंदेगा अपने पतले रेशों से।
इसकी जुबान में है मीठा जहर
जल्दी फँसा लेता है
भोले-भाले जीवों को
सारे घर में फैला देगा नर्क
कालिख और अंधेरा
बढ़ता चलेगा दो नम्बरी घेरा।

मैं ठान लेता हूँ नहीं बखशूंगा एक को भी
जिसने यह खूनी भेंड़िये की तरह
खोखला करने की, चूस डालने निरीह जीवों की
हत्या, झूठ-फरेब, दगाबाजी की है।

उड़ान

अब तिलचट्टे उड़ते हैं रातों में,
शायद बरसाती उमस
सीमेंट और लकड़ी की फाँकों में कीलें ठोंकती है।

वे फर्श पर आ टपकते हैं घोड़ों-से
पंखे की हवा लेने
और उनकी मादा छलाँग बिस्तर पर छितरा जाती है
जब अचानक, बत्ती गुल होती है
वे एक पूरे मौसम का कुहासा पंखों पर लाद
समन्दर लाँघने का नाटक करते हैं।

रावण को स्वर्ग तक कितनी सीढ़ियों की जरूरत थी
या राम की कलाई पर कौन-सी घड़ी थी

बस, कुछ बेतरतीब उड़ानें
और वे जा टकराते हैं क्लैंपिग डॉल से
कुछ चाबी बची है शायद
वह पीठ के बल गिरती है
और तालियाँ बजा उठती है!

चिकी

साथ रहने के लिए क्या है
चिकी की नरम जीभ महसूस कर लेती है
पैरों की चमड़ी,
तितली-सी छोटी गुदगुदी।

उसी खरहे का गोश्त कैसे चढ़ेगा मेरी जुबान पर
जिसे इतने प्यार से सहलाते हैं मेरे हाथ
अपनी तोतली बच्ची की याद में
क्या रहेगा साथ में ...
आदमी की अपनी सन्तानों का भरोसा
तीर्थ-स्थानों पर खर्चा चढ़ावा
यात्राओं के दौरान खड़ा किया दोस्ताना
साथ रहने के लिए क्या है
चिकी खरहे के गले में टुनटुनाती घंटी
गिजर के गर्माते पानी की हलचल।

1983 के लिए

मेरे दोस्त, अपनी आस्थाओं को जगाओ !
1982 की तरह इन्हे भोंथरा न बनाओ।
कोई वजह नहीं।
आकाश में तुम्हारे नाम का सितारा न हो।

कोई उदाहरण नहीं दूँगा।
किताबों की सारी बातें तुम्हें मालूम हैं,
नहीं मालूम तो बस इतना कि
तुम्हारे हाथों में क्या है।

तुम इसे ग्रहों सी खींची लकीरों का गुच्छा मानते हो
या मुहर लगाने वाली मशीन।
पर्वत की चोटियाँ कदमों पर झुकाने वाले
आसमान की हेकड़ी तोड़ने वाले
हाथों को तुमने सिर्फ
गाल पर तमाचे की तरह इस्तेमाल किया है
या तीली रगड़ मुँह का सिगरेट सुलगाने में बरता है
तुमने इनकी पकड़ को नहीं महसूसा अभी
इनकी लंबाई को नहीं सोचा कभी

उठो !
1983 के हाथों से अपने हाथ मिलाओ
बाहें झाड़ो !
प्रतिकूलताओं से पंजे लड़ाओ !

दौर

हर आदमी जल्दी से जल्दी पैसा बनाने के चक्कर में है
गलत या सही, सोचने की फुर्सत नहीं,

बनिया बाजार देखता है
ठेला खरीददार देखता है
बाबू मजबूरी देखता है
रिक्शा मौसम देखता है
कुली टाइम देखता है
टैक्सीवाला लिबास देखता है

कानून जो बने सहूलियत के लिए
इस्तेमाल होते पैसा ऐंठने के लिए
लोगों को तंग करने के लिए
झूठा रौब गाँठने के लिए

सारा राज्य बड़ा-सा मटका बन चुका
एक दिन में सबको लखपति बनाने के लिए
जगह-जगह सरकारी अड्डे खुले
नशाखोरी राष्ट्रीय आय बन चुकी
देश का चरित्र विदेशी बैंकों में हुआ गिरवी
बाजी खेलते मुल्क की बुद्धि का दाँव लग चुका
कर्ज की गठरियाँ हर माथे पर लदीं
आजादी, नेता और नीति की बोली लगी

जलियाँ

एक जलियाँवाला बाग हुआ था
सारा हिन्दुस्तान उबल पड़ा था
आज हर आए दिन डायर ताल ठोंकता
"करूँ आतंकवाद समूल नष्ट"
संविधान की दीवारों से कैद कर
गोलियों की बौछार
नहीं कोई चूं
उलटा उसे शाबाश !

कितना हो गया सयाना दसमुँह
फोड़े संसद में बम
वही बाँटे हथियार
वही करे सुरक्षा समितियाँ तैयार
करे भीड़ में विस्फोट
करे औषध उपचार
भरे अनुदान-राशि का डकार
पंजाब में सिख जवान होना
सबसे घोर अपराध !

जाग······जाग ऐ भारत !
देख किसकी ये साजिश
हो रही मजबूती की पहली पंक्ति बेकार
देश-द्रोही दे करार
चल रहा आजादी पे वार
उनसठवाँ संशोधन

फिर खूनी संशोधन
जनतन्त्र का मर्दन !
    काला धन नाचे नाच
    करे कुर्सी का जाप
    कानून नहीं, शोधो अपना चलन
    मजदूर-किसान पर वार
    बेरोजगारों पर वार
    अब नहीं बरदाश्त !

कालापानी ही नियति तो हो ऐ कलम !
जाग-जाग गुडाकेश
झूठ के ववंडर से सच को निकाल
देश बेचे जा रहे सत्ता के दलाल !

शान्ति की खोज

शान्ति की खोज में हमले जारी हैं
प्रक्षेपास्त्रों से संधि प्रस्ताव फेंके जा रहे हैं !!

भीड़ पत्थर बरसा रही है
धर्म गुटबन्द छूरेबाजी और आगजनी में लगा है
नेता चटपटी झालमूडी बयान दे रहे हैं
अखबार आतंकवाद भुना रहे हैं
रेडियों-टी० वी कुर्सी गा रहे हैं ।

आदमी चुन लिया जाता है
जगह तय कर ली जाती है
खबर डिस्पैच को तैयार होती है
एक विस्फोट होता है
और अर्द्धसैनिक ईलाका घेर लेते हैं
कर्फ्यू लग जाता है
मोल-भाव शुरू हो जाता है
रातोंरात भाईचारे की पुकार इकट्ठी होती है
एक बनिया कोषाध्यक्ष दूसरा सचिव बन जाता है
अनाथों-विधवाओं की सेवा होने लगती है
रिलीफ बाँटने अमन का धन्धा हो जाता है !

एक निश्चित लय में शासक
कौमी एकता का तराना गा रहे हैं
योजनाबद्ध तरीके से खाड़ी में
युद्धपोत शान्ति ला रहे हैं !

पहले जनमत बैंकों से ध्वस्त कर दो
फिर उन्हें स्वच्छ सरकार देने जा रहे हैं
विरोधियों को पहले हथियार और ठिकाने दो
फिर उनके संगठन भूनने शान्ति सेना ला रहे हैं
पहले फौज से सब कुचल डालो
शिखर-वार्त्ताओं को फिर विदेश जा रहे हैं

वाह, वाह तुम्हारी युद्धगाथाओं का शौर्य
तुम्हारी अन्तरिक्ष भेदी तकनीक
तुम्हारी लम्बी दूरी, मध्यम दूरी
तुम्हारी कूटनीति, धोखाधड़ी, छल-कौशल्य
सोलह-बीस जेट बमवर्षक
तुम्हारी विनाश लीला के गुण
उपग्रहों जरिये संसार के सारे
मानव, देव, किन्नर गा रहे हैं !

5

चाँद

लटका हुआ है स्ट्रीट लैंप की तरह
    पूरब में पूरा चाँद गोल
कपास से खींचा गया उज्ज्वल
    बिखेरता चाँदी छल्लों में
    कितनी लम्बी-चौड़ी धरती हमारी
    कितना है आकाश का व्यास
    मुझे नहीं मालूम
क्यों नहीं पड़ता झोपड़ी में
    थोड़ा-सा प्रकाश ?
किसने बोया अँधेरा जीवन में
    क्यों खाक हुई आस ?

लक्ष्य के लिए

ठोस धुँध का बना सफेद हाथी था रास्ते पर
    डरावना······अभेद्य।
पर नहीं, उसमें दाखिल होकर देखा
    पहचान हो लक्ष्य की
    कसक हो पहुँच की
तो दिखता है साफ सब कुछ
    परत मौजूद होती उजाले की

धूप निकलेगी

मेरी माँ ने कहा था—
    आग बुझ चुकी है…
    धूप नहीं निकलेगी ।

वही हुआ…
    अभी-अभी मेरी आँखों के सामने आग
    अपनी आखिरी लपट समेट खामोश हो गई,
बन्दूकधारी सिपाही
    बारूद का धुआँ नलियों से उड़ाने के बाद
    गम्भीर/वैन में लौट आये
मुर्दानगी उनके चेहरों से ज्यादा
    किसी किताब में नहीं पढ़ी जा सकती
    आग बुझ चुकी है ।
और आज बादल आसमान हो गए हैं ।
धूप नहीं निकलेगी,
दिन एक अजीब किस्म की धुँधली परछाइयों में उलझा रहेगा

    माँ की बात सच है…
    लेकिन|सिर्फ़ आज के लिए ।
    धूप जरूर निकलेगी…
दिन बिना भरपूर उजाले के नहीं चल सकते
    आग फिर जल उठेगी…
    पहिये बिना भरपूर ऊर्जा के नहीं चल सकते ।

नौ बजे

गधों को शर्म आती
तो दीवारें ढह जातीं
सुबह नौ बजे सड़कें बुहारी जातीं
नाली की काली रखवाली
सड़क पास ढेर कर दी
    आयेगी कोई गाड़ी
    धुत्त बेलचों साथ
    कोई जान बचाये कि गड्ढे ?

यहीं खड़ी रहो
बच्चे को पीठ पर कर लो
तुम्हारा मरद है न
अभी उतरेगा ट्रक से
तुमसे बीड़ी माँग लेगा,

नहीं लौटी चिड़िया

कई दिनों से ठेंगा दिखा रहे थे
उपग्रह १-बी की तस्वीरों को
बादल दिखते थे
भागे जाते चोर की परछाईं से,

कल छतरी खोल कर खड़ा था कुछ देर
किन-मिन भी हुई
लॉन पर फुदकी गौरैया बीच दोपहरी,

और आज तो बस
एक-एक बूँद
सवा-सवा तोले की
बरफ बनते बरसी
राँची अपनी ऊँचाई पर लौट आया
आज,

नहीं लौटी तो चिड़िया
प्यासी झुलसी बालकनी पर
झूल गई आज उसकी लाश
चोंच में है तिनका
घर उसको कभी भी न था

ग्रह-शांति

अपने ग्रहों से मैं खुद लड़ूँगा
पंडित । जी,
आप ताबीज जागृत मत कीजिए !

सुबह दोनों हाथ देखूँगा सबसे पहले
फिर चल दूँगा कमर बाँध,

भगवती शृंगार कर
कोटा साड़ी पहिर
दुआये देगी आपकी घरवाली
इधर मेरी
राहु केतु से टकरा देगी,

नहीं चाहिए पुत्र
चार पाँव वाली गाड़ी
और अचानक सम्पत्ति
ठीक हूँ कंगाल
अच्छा हुआ मंगल की टेढ़ी नजर
वृहस्पति पर थी
रुक गया मेरा विदेश जाना
मैं यहीं अपने देश में उपजाऊँगा
अमरीका के सुख,

आप मेरे ग्रहों को शांत मत कीजिए
मैं खुद उनसे सलट लूँगा पंडित जी !

कितनी है गरज
कितना है माल

उसी के हिसाब का आपको ख्याल
आप का है दावा कि ग्रहों के चलते
बने जोधपुर के बंदी
ग्रहों के जोर बने कोई प्रधान मंत्री
ग्रहों के चलते पाये अमर शहीदी
शान्त करो शान्त उन्हें।
धारो विजय कंगन
धूप पैंतालिस दिन
साथ रहे चंदन

यह तो क्या बात हुई
मेरे ग्रह खराब
मेरे बाप के खराब
ग्रहों का वंश से कैसा लगाव ?

करते 'गर धाँधली वे भी
सबक सिखाऊँगा
मुट्ठी-भर लोगों ने मिल कॉकस बनाया है।

ईश्वर

ईश्वर, कहोगे,
    तुम्हें चार बजे भी उठा देगा
फिर नौकर-सा उसको ट्रीट करोगे
    तो कैसे चलेगा ?
रजाई में दुबके कहोगे--
    "एक कप गरमा-गरम चाय"
    नहीं लाके देगा.

वह सिर्फ जगा सकता है
चेतस् है
हाथ-पाँव, बुद्धि, मन, प्राण
बाकी नौकर दिये हैं तुमको
उनका एरिया है
उसमें तुमको प्रेरणा चाहिये
माँगोगे तो देगा.
अब कहोगे कि गीजर का स्विच ऊपर कर दे
तो कैसे होगा ?

नौकरों को इतना काबू कर लो
    हर बात मानें
घर के अंदर और बाहर भी
    हुक्म जानें.

अब कहोगे तुम्हारे कंधे से कौआ भी उड़ाये
    .....तो हँसेगा.

पछतावा

ठहरो दोस्त,
यकीन मानो अभी हमारे दिलों से
तुम्हारी मुहब्बत नहीं उखड़ी
'गर एक भूल की है तुम पर अविश्वास की
तुम तो उसे न दुहराओ.

हमें पछतावे का मौका दो
हमसे न कटो
एक बार जुड़ने का मौका दो.

अभी हमें डर है तुम्हारे गुस्से का
आतंक का
एक बार सहजता दिखाओ
हमें लगे कि तुमने हम पर यकीं नहीं खोया
हमें अपनी नज़रों से नहीं गिराया.

यकीन मानो दोस्त
कल हमें कत्ल कर दोगे
सी नहीं होगी तुम्हारे खिलाफ.

गर्मी की रात

ठोस गर्मी की आज एक रात है
ऐसा समझ लो सूरज नहीं डूबा
रात हुई है·

खिड़कियों से यह उम्मीद नहीं कर सकते
दीवारें हटा दी जायें, तो भी
कि लायेंगी सुकूने-हवा
नगर के पंखों को आकाश से झुलादो
तो शायद कोई बात हो !
देखो रबर के पत्ते को
बीड़ी पत्ते-सा झुलस रहा
सारी गर्मी की जड़
अकेला बल्ब लग रहा
आज अंधेरे की छाती पर
विषैली ऊमस लोट रही

कई परतों वाले घने बादल
लक्षद्वीप की सैर को निकल गये
मेंढक जरसी गाय-सा रेंक
गुफायें ढाह रहा है
चाँद पसीने से लथपथ बच्चे-सा
सोया है !

नमस्कार

मानव की पशुता को नमस्कार
स्कूली छात्रा अकेली पकड़
किया सामूहिक बलात्कार.
मानव की बर्बरता को नमस्कार
निरीह यात्रियों को बस से खींच
दिया मौत के घाट उतार.

झूठ की जय-जयकार नमस्कार
बेकसूरों को सूलों पर टाँग
गद्दी पर बैठें मक्कार
सत्ता के न्याय को नमस्कार
पाँच साल कैद में सड़
रिहा जोधपुर के बंदी सरदार

Indian Institute ... Study
G-5364
7/11/02
SHIMLA

कवि-परिचय

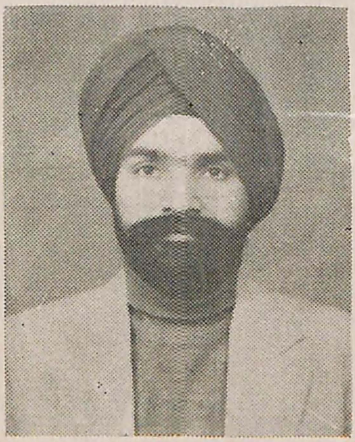

जसबीर चावला

जन्म : 7 सितम्बर, 1953, ईटावा (उ० प्र०)

शिक्षा : धातु की अभियान्त्रिकी में स्नातक, रूसी भाषा में डिप्लोमा

अध्यवसाय : अनुसंधान एवं विकास केन्द्र, सेल राँची में इंजीनियर पद पर कार्यरत

प्रकाशित कृतियाँ : (1) चेरनोबिल तथा अन्य कवितायें
(2) रोटी की गंध

पता : एन–82, श्यामलं
राँची–834002

Library IIAS, Shimla
H 811.8 C 399 H
95364